# मानवकल्याण में ज्योतिष की व्यापक भूमिका

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

**भारतीय** ज्ञान-परंपरा का वह विशिष्ट आयाम है जिसमें स्वास्थ्य, रोग, प्रकृति, ग्रहगतियाँ, ऋतुचक्र और मानव-चेतना को एक ही सांस्कृतिक और दार्शनिक परिप्रेक्ष्य से देखा गया है. इसका उद्गम उसी विश्वदृष्टि से सम्बद्ध है जिसमें मनुष्य और ब्रह्माण्ड के बीच एक गहन संवाद निरंतर प्रवाहित माना गया है. प्राचीन ऋषियों ने ब्रह्माण्ड को एक जीवंत, चेतन और शक्तिमय सत्ता के रूप में देखा और मानव शरीर को उसका सूक्ष्म रूप—क्षुद्र ब्रह्माण्ड—के रूप में समझा. वही ऊर्जा जो ग्रहों और नक्षत्रों को गति देती है, वही शक्तियाँ मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और प्राणिक क्रियाओं को भी संचालित करती हैं; यह विचार इस शास्त्र की मूल प्रेरणा है. वेदों में स्वास्थ्य और आयु को केवल जैविक घटना नहीं, बल्कि ऋत, सत्य, धर्म, यज्ञ और ब्रह्म के साथ सामंजस्य का परिणाम माना गया है. अतः जब ज्योतिष ग्रहगतियों और कालचक्र का विवेचन करता है और आयुर्वेद त्रिदोष-धातु-मल के समन्वय से शरीर की संरचना समझता है, तब दोनों शास्त्र एक ही व्यापक सत्य के दो पक्ष प्रतीत होते हैं. इसलिए चिकित्सा-ज्योतिष का उद्भव किसी एक ग्रंथ या एक परंपरा से नहीं, बल्कि हजारों वर्षों के अवलोकन, अनुभव, ध्यान, साधना, ऋतुचक्र के निरीक्षण और ब्रह्माण्डीय व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन से हुआ है.

वेदांग-ज्योतिष में नक्षत्रों, ग्रहों और ऋतुओं का जिस सूक्ष्मता से विश्लेषण किया गया है, वह बताता है कि प्राचीन भारत में खगोलीय घटनाओं को केवल गणना का विषय नहीं माना जाता था, बल्कि उन्हें मानव-जीवन के हर क्षेत्र—कृषि, मौसम, स्वास्थ्य, अध्यात्म, चिकित्सा और सामाजिक आचरण—से जोड़ा गया था. अथर्ववेद में रोगों, विषों, औषधियों और स्वास्थ्य-संबंधी मन्त्रों का सम्पूर्ण संग्रह इस बात का साक्ष्य है कि भारतीय मनुष्य के लिए स्वास्थ्य और आध्यात्मिकता परस्पर पूरक थे. वेदों में 'आयुष्या सूक्त' और 'अरिष्ट-नाशक सूक्त' में ग्रहशक्तियों, देवताओं तथा प्राकृतिक तत्वों से स्वास्थ्य की रक्षा की प्रार्थना की गई है. इसका अर्थ यह है कि मानव-स्वास्थ्य को सदैव एक व्यापक ब्रह्माण्डीय व्यवस्था का अंग माना गया.

चरक और सुश्रुत संहिताएँ स्पष्ट रूप से बताती हैं कि 'दैव-व्यपाश्रय उपचार' बिना ज्योतिष के सम्भव नहीं. चरक ने जिन रोगों को 'दैविक' कहा, उनमें ग्रह-नक्षत्रों के प्रतिकूल संयोग, काल-परिवर्तन, ऋतु-विपर्यय और दैवी शक्तियों की अवहेलना को कारण बताया. इसका आधार यह था कि प्रकृति और पुरुष के मध्य सूक्ष्म तालमेल बिगड़ने पर रोग उत्पन्न होता है. इसी प्रकार सुश्रुत के अनुसार, स्वास्थ्य तभी टिकाऊ है जब शरीर, इन्द्रियाँ, मन और आत्मा में समन्वय बना रहे. ग्रहकारी प्रभाव इसी समन्वय को बनाए रखने या भंग करने में भूमिका निभाता है. इसलिए चिकित्सा-ज्योतिष केवल रोग-निर्माण की समझ नहीं देता, बल्कि यह जीवन के संपूर्ण संतुलन की पद्धति का मार्गदर्शन करता है.

आयुर्वेद और ज्योतिष की अंतर्संबद्धता को और गहराई से देखें तो पाएँगे कि त्रिदोष (वात-पित्त-कफ) का ज्योतिषीय प्रतिनिधित्व ग्रहों में है. सूर्य पित्त का कारण है, जो शरीर में अग्नि, ऊर्जा, पाचन और दृष्टि का नियामक है. शीतल और स्निग्ध चंद्र कफ का प्रतिनिधि है, जो जल तत्व, ओज, स्थिरता और पोषण प्रदान करता है. शनि वात का प्रतीक है, जो शरीर में गति, स्नायु-तंत्र और वायु-तत्व का नियमन करता है. मंगल रक्त, अग्नि और उग्रता का वाहक है, इसलिए इसकी प्रतिकूल स्थिति में शोथ, रक्तदोष, चोट और अग्निमान्द्यता उत्पन्न हो सकती है. बुध तंत्रिका-तंत्र, त्वचा और बुद्धि-प्रक्रियाओं से संबद्ध है. गुरु शरीर में वृद्धि, पोषण, शुक्र और ओज का संवाहक है. शुक्र प्रजनन-शक्ति, सौंदर्य, रक्त की शुद्धि और त्वचा की कोमलता से संबद्ध है. राहु-केतु का मनोवैज्ञानिक और विषैला प्रभाव आधुनिक मानसिक-स्वास्थ्य सिद्धांतों से भी मेल खाता है.

योग-शास्त्र इसके और भी गहरे पक्ष को उद्घाटित करता है. योग मानव-शरीर को प्राण, नाड़ियाँ, चक्र और कुंडलिनी के दृष्टिकोण से समझता है. प्रत्येक चक्र को किसी न किसी ग्रह के साथ सम्बद्ध माना गया है- मूलाधार शनि, स्वाधिष्ठान शुक्र, मणिपूर सूर्य, अनाहत शुक्र/गुरु, विशुद्ध बुध, आज्ञा चंद्र और सहस्रार सभी ग्रहों और आध्यात्मिक चेतना के संयोग से संबंधित है. योग और ज्योतिष दोनों ऊर्जा-क्षेत्रों की गति को समझते हैं, और आयुर्वेद इन ऊर्जाओं की भौतिक अभिव्यक्ति को त्रिदोष के रूप में समझाता है. इस कारण चिकित्सा-ज्योतिष एक समन्वित विज्ञान बनकर सामने आता है—जहाँ आयुर्वेद शरीर को, योग मन और प्राण को, और ज्योतिष ब्रह्माण्डीय प्रवाह को समझाता है.

चिकित्सा-ज्योतिष का वास्तविक महत्त्व तब और प्रबल हो जाता है जब हम इसे निवारक चिकित्सा के संदर्भ में देखते हैं. मनुष्य की जन्मकुंडली में जो ग्रहस्थितियाँ होती हैं, वे रोगों के प्रति उसकी संवेदनशीलता का संकेत पहले से देती हैं. जैसे चंद्र का पापदृष्ट या नीच होने पर व्यक्ति को मनोविकार, कफदोष, अवसाद, अनिद्रा या हार्मोनल असंतुलन की प्रवृत्ति हो सकती है. सूर्य की दुर्बलता नेत्र, पाचन, प्रतिरक्षा और हृदय पर प्रभाव डाल सकती है. शनि की प्रतिकूल स्थिति से वातदोष, गठिया, स्नायुविकार, त्वचा रोग और दीर्घकालिक रोग का खतरा बढ़ जाता है. केतु की दोषग्रस्त स्थिति मानसिक अस्थिरता, भय, भ्रम या आत्मसंघर्ष का कारण बन सकती है. यदि ये प्रवृत्तियाँ पहले से ज्ञात हों, तो व्यक्ति अपनी दिनचर्या, आहार, योगाभ्यास, ध्यान-साधना और औषध-सेवन को उसी अनुसार संयोजित कर सकता है. चिकित्सा-ज्योतिष की विशेषता यह भी है कि यह रोग के प्रकोप के समय का अनुमान लगा सकता है. ग्रहों की दशाएँ, अंतरदशाएँ और गोचर यह बताती हैं कि रोग प्रवृत्ति कब सक्रिय होगी और कब शांत होगी. आयुर्वेदिक उपचारों, औषधियों, पंचकर्म और योगाभ्यास का चयन भी दशाओं के आधार पर अधिक प्रभावी बन जाता है.

> अंततः चिकित्सा-ज्योतिष का उद्देश्य 'आरोग्य' नहीं, 'स्वास्थ्य' है—अर्थात् नहीं, बल्कि पूर्णता, संतुलन, आनंद, प्रकाश, शक्ति, विवेक और आध्यात्मिक विकास की अवस्था. यही कारण है कि भारतीय परंपरा में स्वास्थ्य को 'स्व' की 'स्थिति' माना गया है—जहाँ मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप में स्थापित हो जाए. चिकित्सा-ज्योतिष इस यात्रा का मार्गदर्शक है—एक ऐसा शास्त्र जो ब्रह्माण्ड के छोरों से लेकर मनुष्य के हृदय तक एक ही संदेश देता है—सर्वे सन्तु निरामयाः—सभी निरामय हों, सभी शांति प्राप्त करें, सभी प्रकाश को ग्रहण करें और सभी जीवन के उच्चतम उद्देश्य को प्राप्त करें.

## विवाह पंचमी पर क्यों विशेष है राम-सीता का विवाह?

**विवाह** पंचमी हिन्दू धर्म के सबसे पवित्र और शुभ पर्वों में से एक है, जिसे भगवान श्रीराम और माता सीता के दिव्य विवाह की स्मृति में पूरे श्रद्धा-भाव से मनाया जाता है. यह दिन न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि दांपत्य जीवन में सुख, शांति, प्रेम और समृद्धि की प्राप्ति के लिए भी अत्यंत फलदायी माना जाता है. मान्यता है कि इस दिन राम-सीता की विधि-विधान से पूजा करने पर वैवाहिक जीवन में आने वाली सभी बाधाएँ दूर होती हैं और जीवन में सौभाग्य का आगमन होता है.

साल 2025 में यह पर्व विशेष महत्व रखता है, क्योंकि पंचमी तिथि ऐसे समय पड़ रही है जब तीन अत्यंत शुभ योग बन रहे हैं- ध्रुव योग, सर्वार्थ सिद्धि योग और शिववास योग. ये योग धार्मिक क्रियाओं, व्रतों और नव दंपतियों के लिए विशेष रूप से शुभ माने जाते हैं. यही कारण है कि विवाह पंचमी का इंतज़ार हर भक्त को रहता है, ताकि वह इस दिन राम-सीता के आदर्श दांपत्य का स्मरण कर अपने जीवन में भी खुशहाली का स्वागत कर सके. विवाह पंचमी 2025 का पर्व भक्तों के लिए अत्यंत शुभ और मंगलकारी अवसर लेकर आया है.

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार त्रेता युग में इसी पंचमी तिथि को जनकपुर में भगवान श्रीराम और माता सीता का विवाह संपन्न हुआ था. इसलिए यह दिन प्रेम, त्याग, मर्यादा और आदर्श दांपत्य जीवन का प्रतीक माना जाता है. भक्त इस अवसर पर श्रीराम-सीता के दिव्य मिलन का स्मरण करते हुए घरों और मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना करते हैं. प विशेष बात यह है कि इस बार विवाह पंचमी मंगलवार के दिन पड़ रही है, जो स्वयं मंगल ग्रह का दिन है और मंगल को विवाह का कारक ग्रह कहा जाता है. इससे इस पर्व का महत्व और अधिक बढ़ जाता है.

> विवाह पंचमी 2025 के दिन ध्रुव योग, सर्वार्थ सिद्धि योग और शिववास योग जैसे पवित्र संयोग बन रहे हैं. ध्रुव योग को स्थिरता और सफलता का प्रतीक माना जाता है. जो व्यक्ति इस योग में संकल्प लेते हैं, उनके कार्यों में स्थायी सफलता मिलती है. सर्वार्थ सिद्धि योग हर शुभ कार्य को फलदायी बनाता है और जीवन में सौभाग्य का आगमन होता है. वहीं शिववास योग भगवान शिव की कृपा का सूचक है, जिससे धार्मिक प्रयासों में विशेष सफलता प्राप्त होती है.

## चंपा षष्ठी: कार्तिकेय और खंडोबा बाबा की पूजा का विशेष महत्व

**चंपा** षष्ठी हिंदू धर्म का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और पवित्र व्रत है, जिसे हर वर्ष मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि पर मनाया जाता है. यह दिन भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र भगवान कार्तिकेय को समर्पित है, जिनकी आराधना से साहस, शक्ति, सफलता और जीवन में विजयी होने का आशीर्वाद प्राप्त होता है. कई क्षेत्रों में इस दिन खंडोबा बाबा की विशेष पूजा की जाती है, जिन्हें शिव के ही अवतार माना गया है.

माना जाता है कि चंपा षष्ठी के दिन की गई पूजा-पाठ और व्रत से पापों का नाश होता है और मन को शांति मिलती है. इस दिन भगवान सूर्य की उपासना का भी विशेष महत्व है. भक्त सुबह सूर्योदय से पहले स्नान करके सूर्यदेव को अर्घ्य अर्पित करते हैं और दिनभर व्रत रखते हैं. चंपा के फूल, जल, दूध और गंगाजल से शिवलिंग का अभिषेक करना विशेष रूप से शुभ माना जाता है.

साल 2025 में चंपा षष्ठी का पर्व 26 नवंबर को मनाया जाएगा, जिससे भक्तों में उत्साह का वातावरण है और सभी इस दिन की तैयारियाँ कर रहे हैं. चंपा षष्ठी 2025 का पावन पर्व इस वर्ष बुधवार, 26 नवंबर को धूमधाम से मनाया जाएगा. मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की यह षष्ठी तिथि भगवान कार्तिकेय और खंडोबा बाबा को समर्पित होती है. यह दिन उन भक्तों के लिए विशेष मायने रखता है जो जीवन में शक्ति, उत्साह, साहस और सफलता की कामना करते हैं. माना जाता है कि इस दिन भगवान कार्तिकेय की पूजा करने से जीवन के सभी संकट दूर होते हैं और मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं.

> पूजा विधि में कलश स्थापना, दीपक जलाना, फूलों से सजावट, धूप-दीप, कपूर, नैवेद्य और चंपा के पुष्प अर्पित करना शामिल है. चंपा का फूल इस व्रत का प्रमुख तत्व है, क्योंकि माना जाता है कि यह फूल भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है. शिवलिंग पर दूध और जल चढ़ाने के बाद भक्त चंपा षष्ठी की कथा सुनते हैं और अंत में भगवान कार्तिकेय से परिवार में सुख-शांति और समृद्धि की प्रार्थना करते हैं.

## भानु सप्तमी क्यों है खास? जानें इसका धार्मिक महत्व

**हिंदू** कैलेंडर में ऐसी तिथियाँ विरले ही होती हैं जो स्वयं अपने नाम से शुभता और ऊर्जा का संकेत देती हों. उन्हीं में से एक है भानु सप्तमी—वह पवित्र दिन जब सप्तमी तिथि रविवार को पड़ती है और पृथ्वी का जीवनदाता सूर्यदेव अपने विशिष्ट प्रभाव से भक्तों को आशीर्वाद देने के लिए अधिक अनुग्रहशील माने जाते हैं. 'भानु' शब्द सूर्य का प्रतीक है और सप्तमी तिथि का संबंध भी सूर्य से ही है. इसलिए यह संयोग अत्यंत फलदायी माना गया है.

भानु सप्तमी के दिन लोग ब्रह्ममुहूर्त में स्नान, सूर्य अर्घ्य, मंत्रजाप, व्रत और दान जैसे विशेष उपाय करते हैं, जिससे जीवन में सकारात्मकता और सफलता आती है. यह दिन उन लोगों के लिए विशेष रूप से लाभकारी है, जिनकी कुंडली में सूर्य कमजोर हो या सूर्यदोष हो. भानु सप्तमी का पावन उत्सव इस वर्ष भक्तों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है. रविवार के दिन आने वाली सप्तमी तिथि को भानु सप्तमी कहा जाता है, और इसे सूर्य उपासना का सर्वश्रेष्ठ संयोग बताया गया है. सूर्यदेव जीवन, प्रकाश, स्वास्थ्य और ऊर्जा के प्रतीक माने गए हैं. धार्मिक मान्यताओं में कहा गया है कि सूर्य की आराधना से मन, शरीर और आत्मा तीनों में संतुलन आता है. इस दिन ब्रह्ममुहूर्त में स्नान करने का बड़ा फल बताया गया है. जल में गंगाजल, रोली, हल्दी और तुलसी मिलाकर स्नान करने से शरीर और मन शुद्ध होते हैं. स्नान के बाद तांबे के लोटे में जल, लाल पुष्प, चावल, शक्कर और रोली मिलाकर सूर्यदेव को अर्घ्य दिया जाता है. ऊं घृणि सूर्याय नमः मंत्र का जाप करते हुए दिया गया अर्घ्य नेत्रज्योति बढ़ाता है, मानसिक शक्ति को विकसित करता है और स्वास्थ्य में सुधार लाता है.

## हनुमान भक्ति और दान से शनि देव देते हैं विशेष कृपा

> शनिवार का दिन शनि भक्ति के लिए सबसे शुभ माना गया है. यदि इस दिन कुछ सरल और प्रभावी उपाय किए जाएँ, तो शनि के खराब प्रभाव कम होकर सकारात्मकता बढ़ने लगती है. हनुमान जी की उपासना, सरसों के तेल का दीपक, दान-पुण्य और शनि मंत्रजाप से जीवन की बाधाएँ दूर होने लगती हैं.

**ज्योतिष** शास्त्र के अनुसार शनि देव को न्याय का देवता माना गया है. वे व्यक्ति को उसके कर्मों के आधार पर फल प्रदान करते हैं. इसलिए जब किसी व्यक्ति पर साढ़ेसाती या ढैया का प्रभाव शुरू होता है, तो जीवन में अचानक संघर्ष बढ़ने लगता है. कभी नौकरी में परेशानी, कभी आर्थिक तनाव, तो कभी स्वास्थ्य संबंधी बाधाएँ- ऐसा लगता है मानो भाग्य साथ नहीं दे रहा. लेकिन ज्योतिष शास्त्र यह भी कहता है कि शनि देव कठोर जरूर हैं, मगर अन्याय कभी नहीं करते. अच्छे कर्म करने वाला और सेवा-पूजा में लगा रहने वाला व्यक्ति उन्हें जल्दी प्रसन्न कर लेता है.

शनिवार का दिन शनि भक्ति के लिए सबसे शुभ माना गया है. यदि इस दिन कुछ सरल और प्रभावी उपाय किए जाएँ, तो शनि के खराब प्रभाव कम होकर सकारात्मकता बढ़ने लगती है. हनुमान जी की उपासना, सरसों के तेल का दीपक, दान-पुण्य और शनि मंत्रजाप से जीवन की बाधाएँ दूर होने लगती हैं. इन उपायों की विशेषता यह है कि ये न केवल ग्रहों के प्रभाव को शांत करते हैं, बल्कि व्यक्ति के मन और ऊर्जा पर भी सकारात्मक असर डालते हैं.शनिवार का दिन शनि देव को समर्पित माना जाता है. वे कर्म, सत्य और न्याय के अधिष्ठाता माने जाते हैं. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जब किसी व्यक्ति पर साढ़ेसाती या ढैया चलती है, तो जीवन के कई क्षेत्रों में रुकावटें आने लगती हैं. एक ओर मेहनत बढ़ती है, तो दूसरी ओर परिणाम देर से मिलता है. कई बार आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है और मानसिक तनाव बढ़ जाता है. परंतु शनि देव को प्रसन्न करने के उपाय बेहद सरल हैं और इन्हें नियमित रूप से करने पर इनके अद्भुत परिणाम दिखते हैं.

**सबसे पहला उपाय है**-हनुमान जी की भक्ति. हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ शनि के दोषों को कम करने में अत्यंत प्रभावी माना गया है. मान्यता है कि जहां हनुमान जी का नाम लिया जाता है, वहां शनि देव कष्ट नहीं देते. हर मंगलवार और शनिवार को हनुमान मंदिर जाकर पूजा करने से मानसिक शांति मिलती है.

**दूसरा उपाय है**- सरसों के तेल का दीपक. शनिवार की शाम पीपल के नीचे या शनि मंदिर में सरसों का दीपक जलाना बहुत शुभ माना गया है. तेल अर्पित करते समय ऊँ शं शनैश्चराय नमः मंत्र का जाप करने से शनि दोष शांत होते हैं और जीवन में स्थिरता आती है.

**तीसरा उपाय है**- दान और सेवा. शनि देव गरीबों, असहायों और वृद्धों के रक्षक माने जाते हैं. शनिवार के दिन काले तिल, काले कपड़े, ऊड़द दाल या लोहे का दान करना विशेष शुभ माना गया है. वृद्धजनों की सेवा करने से शनि देव तुरंत प्रसन्न होते हैं.

इसके अलावा, प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः मंत्र का 108 बार जाप करना नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर मन को स्थिर बनाता है. जब व्यक्ति इन उपायों को श्रद्धा से करता है, तो उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आने लगते हैं. शनि देव धीरे-धीरे बाधाएँ हटाकर सफलता और समृद्धि के मार्ग खोल देते हैं.

## रसोईघर की वास्तु गलतियां ला सकती हैं आर्थिक संकट

**अक्सर** घर का दिल कहे जाने वाले रसोईघर में की गई कुछ मामूली वास्तु गलतियां आपके जीवन में आर्थिक संकट, कर्ज, कलह और मानसिक अशांति तक ला सकती हैं. वैदिक ज्योतिष के अनुसार, रसोईघर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार बेहद जरूरी होता है. यदि रसोई में अग्नि, जल, अनाज और बर्तन से जुड़ी वस्तुओं को वास्तु अनुसार न रखा जाए, तो घर में दरिद्रता और पारिवारिक तनाव बढ़ सकता है.

**गलत दिशा में रसोई**- वास्तु शास्त्र के अनुसार, रसोईघर हमेशा दक्षिण-पूर्व दिशा (अग्निकोण) में होना चाहिए. यदि रसोई उत्तर-पूर्व दिशा में बनी हो, तो इससे आर्थिक हानि, कर्ज और पारिवारिक विवाद बढ़ सकते हैं.

**तेल के कंटेनर को उल्टा या खुला न रखें**- तेल, विशेषकर तिल का तेल, शुक्र ग्रह से जुड़ा होता है, जो धन और समृद्धि का प्रतीक है. यदि तेल की बोतलें उल्टी या खुली रखी जाएं तो इससे फिजूलखर्ची, झगड़े रिश्तों में दरार आ सकती है.

**नमक की बोतल का वास्तु**- नमक को धन और स्थिरता से जोड़ा गया है. इसे हमेशा सीधे, साफ और सूखे स्थान पर बंद कंटेनर में रखें. प्लास्टिक के बजाय कांच या सिरेमिक कंटेनर का उपयोग करें.

**अनाज के कंटेनर खाली न रखें**- चावल, गेहूं और दाल जैसे अनाज भरे और ढंके हुए कंटेनर में रखने चाहिए. खाली डिब्बे रखने से घर में अभाव और मानसिक चिंता बढ़ सकती है.

## राशिफल

दिनांक- 23 से 29 नवम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

**साप्ताहिक ग्रहस्थिति**-इस सप्ताह सूर्य वृश्चिक राशि में, मंगल वृश्चिक राशि में, वक्री बुध वृश्चिक राशि में, ता. 23 को 6.31 शाम से तुला राशि में, वक्री गुरू कर्क राशि में, शुक्र तुला राशि में, ता. 27 को 11.14 दिन से वृश्चिक राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, ता. 28 को 8.18 रात से मार्गी, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा धनु मकर कुम्भ और मीन राशि में संचरण करेगा.

**ग्रहयोगों का प्रभाव** :- ता. 23 को वक्री तुलायां बुध के प्रभाव से वायदा एवं हाजर बाजारों में तेजी से लाभ मिलेगा व्यापारी लाभ उठायें. घी, गुड़, खाड़, चावल, रूई, सूत, सन, सोना, चांदी, तिल, तेल तेज होंगे, हाजर बाजार में कुछ मंदी आने का भी योग है अतः व्यापारी सावधानी से काम करें. ता. 26 वृश्चिके शुक्र के प्रभाव से वायदा एवं हाजर बाजार की लाईन बदल जायेगी व्यापारी सावधानी रखें. गुड़, खाड़, रूई, बारदाना, घी, तिल, तेल, चावल, अनाज में मंदी होगी, शेयर बाजार में तेजी रहेगी.

**पर्व-व्रत-त्यौहार** :

| | | |
|---|---|---|
| सोमवार | 24 नवम्बर को | विनायकी गणेश चतुर्थी व्रत |
| मंगलवार | 25 नवम्बर को | विवाह पंचमी, श्रीपंचमी, श्रीराम विवाहोत्सव, नाग दिवाली |
| बुधवार | 26 नवम्बर को | स्कंधषष्ठी, चम्पाषष्ठी |
| गुरूवार | 27 नवम्बर को | नन्दा सप्तमी, भानू सप्तमी, मित्र सप्तमी |
| शनिवार | 29 नवम्बर को | महानन्दा नवमी, |

**मेष**

खानपान पर विशेष ध्यान रखें, घर की जरूरतों का सामान जुटाने में खर्च होगा, परिवार के साथ मांगलिक कार्यो, में जाने का अवसर मिलेगा, वाणी पर संयम रखें, आपकी बातों से किसी को तकलीफहो सकती है, सप्ताह के अंतिम समय किसी मांगलिक उत्सव के साथ आनन्द का अनुभव कर सकते हैं, किसी अतिथि आगमन का योग है, आप अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें.

**वृषभ**

आप मानसिक तनाव के शिकार हो सकते हैं, कार्यक्षेत्र में वरिष्ठों की अपेक्षाओं का ध्यान रखें, यदि आप राजनीति में हैं, तो सफ्लता मिलेगी, किसी करीबी मित्र की सलाह से आपको वित्तीय लाभ के योग हैं, भावनात्मक संबंधों में आप उलझनों से बचें, स्वास्थ्य में आलस्य और सुस्ती महसूस कर सकते हैं, विवादित मामलों से बचने का प्रयास करें, प्रवास में सावधानी बांछनीय.

**मिथुन**

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में अतिरिक्त जिम्मेदारी का बोझ उठा सकते हैं, छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता मिलेगी, नये व्यवसायिक अनुबंधों में शामिल होने का लाभ मिलेगा, आप वित्तीय दृष्टि से संतुष्ट रहेंगे, नये वाहन खरीदने का विचार होगा, सप्ताह के उत्तरार्ध में मानसिक तनाव व निराशा का अनुभव हो सकता है, वाणी में कटुता के चलते करीबी लोगों से सावधानी रखें.

**कर्क**

आप नये व्यवसायिक अनुबंध कर सकते हैं, कारोबार के क्षेत्र में नई सफ्लता मिलेगी, आप अपनी वित्तीय स्थिति से प्रसन्न रहेंगे, आप बच्चों की उपलब्धियों पर गर्व कर सकते हैं, आपकी सामाजिक सक्रियता बढने से मान सम्मान में वृद्धि होगी, सप्ताह के मध्य अधिक आत्म विश्वास में लिया गया फैसला परेशानी का कारण बन सकता है.

**सिंह**

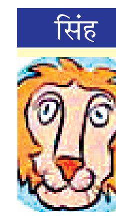

आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, यदि आप किसी नई नौकरी की तलाश में हैं, तो सप्ताह के उत्तरार्ध में सफ्लता मिलेगी, किसी करीबी मित्र से सुखद समाचार मिल सकता है, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, सप्ताह के अंतिम समय अधिकारी वर्ग आपके कामकाज को लेकर नाराजगी व्यक्त कर सकते हैं, वास्तेसावधानी रखें, अत्याधिक विश्वास न करें.

**कन्या**

कार्य क्षेत्र में आपकी मनोकामना पूर्ण होगी, उद्यमी साझेदारों के साथ नई कार्य योजना शुरू कर सकते हैं, आर्थिक स्थिति संतोषजनक रहेगी, आपका स्वास्थ्य पहले से बेहतर रहेगा, मित्रों के साथ दूर दराज की यात्रा का संयोग बनेगा, आर्थिक कार्यो में समय व धन खर्च हो सकता है, नये कार्यक्षेत्र में निवेश कर सकते हैं.

**तुला**

इस सप्ताह आपको अपेक्षित सफ्लता नहीं मिलेगी, वरिष्ठ सहयोगी का सहयोग बना रहेगा, सप्ताह के मध्य अपनों के बीच अकेलेपन व तनाव का अनुभव हो सकता है, पुरानी परेशानियों से कुछ हद तक राहत मिलेगी, राजकीय क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी, यात्रा में सावधानी रखें, स्थाई संपत्ति के विस्तार की योजना बना सकते हैं, गुमी वस्तु मिलने सेविशेष प्रसन्नता रहेगी.

**वृश्चिक**

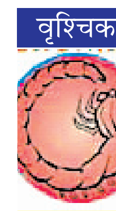

सप्ताह के शुरूआत में सैर सपाटे और दूर दराज की यात्रा में विशेष रूचि रहेगी, कार्यक्षेत्र में आपके वरिष्ठ अधिकारीआपकी सराहना कर सकते हैं, व्यवसायिक कार्यो की जिम्मेदारी में सहयोग मिलेगा, वित्तीय मामलों में सफ्लता मिलेगी, जमीन जायजाद प्रापर्टी के कार्यो में खर्च होगा, सामाजिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी, गैर जरूरी कार्यो में धन खर्च न करें.

**धनु**

आय में वृद्धि होगी, कार्यक्षेत्र में सहकर्मियों का रवैया आपके पति असहयोगात्मक हो सकता है, किसी को भी जल्दबाजी मेंकोई आश्वासन न दें, पूरा कर पाने में परेशानी हो सकती है, पैतृक संपत्ति का विवाद सामने आ सकता है, पूज्यव्यक्ति की सलाह उपयोगी और लाभकारी रहेगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, संतान की उन्नति होगी.

**मकर**

कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव बढ़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में साझेदारों से थोड़ा बहुत तनाव आ सकता है, उद्योग के क्षेत्र में नई कार्ययोजना पर विचार होगा, अपनी इच्छाशक्ति के लिये आप कड़ी मेहनत करेंगे, वित्तीय मामलों मेंशीघ्रता से कोई भी निर्णय न करें, राजकीय क्षेत्र में बेहतर सफ्लता की संभावना बनेगी, किसी की सिफारिश से आपका रूका हुआ कार्य बन सकता है.

**कुम्भ**

सफ्लता के लिये सकारात्मक दृष्टिकोण अपनायें, जमीन जायजाद और परिवहन के क्षेत्र में आपको लाभ मिल सकता है, किसी अनजान व्यक्ति से सुखद समाचार मिलने की संभावना है, कामकाज के सिलसिले में सार्थक यात्रा के योगहैं, दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी, जमीन जायजाद प्रापर्टी संबंधी कामकाज में सफ्लता मिलेगी.

**मीन**

आर्थिक दृष्टि से यह सप्ताह आपके लिये मनोवांछित सफ्लता प्रदान करने वाला होगा, आप नये अनुबंधों में शामिल हो सकते हैं, किसी विपरीत लिंगीय मित्र या साझेदार से लाभ प्राप्त होगा, जमीन जायजाद और उद्योग के क्षेत्र में आपको अड़चनों का सामना करना पड़ सकता है, सहकर्मियों का सहयोग बना रहेगा, वैभव विलासिता का सामान खरीदने पर व्ययभार का योग है.